

पता हि तैश्विनी

लन्थात्

कैथी लन्थों में

चिदीपानी लिखने की नीति लिखाने वाली पुस्तक

जिसे

8806

अंग्रेज विद्वान् बुद्धिमान् श्री जे सी नेसफील्ड
साहब व साहु १८५५ लन्थ के मद्यों के इन्सपेक्टर के

रु काम से

जिला लन्थन के मद्यों के डिप्टी इन्सपेक्टर

मुंशी लन्थिका प्रसाद साहब ने

देवनागरी से कैथी में लिखा

पहिली बार

लन्थन के

मुंशी लन्थिका प्रसाद के छाये प्राने में छपी

लन्थन के मद्यों के

पान हि तै शिनी

लन्यात्

कैथी लन्याओं में

विद्यीपानी लिखने की नीति सिखा ने वाली पुस्तक

जिसे

8806

अर्थात् विद्यीपान् बुद्धिमान् शरी जो सीने में मिले
साख वहाहु १५५ लन्या के मद्यों के इन्में के लके

हु काम से

जिला लन्या के मद्यों के डिप्टी इनमें के ल

मुंशी लन्या का पुस्तक साखने

देवनागरी से कैथी में लिखा

पहिली बार

लन्या के

पुस्तक लिखने के लिये पाने में खपी

लन्या के लन्या

C-NO. 8806 Price R. 1/-

1067

भूमिका

श्री गणेशाय नमः

जानना चाहिये कि जब तक कैथी पढ़ने वाले सिक्ख पारी पन लोना मासी लोना पहाड़ा सवांगी ब्रोगीनः सीप्या करते हैं लोना बहुत दुल्हा गो मुहणवानी चानकी की पारी वह भी गलत वे समझे वृह पढ़लिया मानों सब कुछ पढ़लिया शुद्ध लिखना गो वह जानते ही नहीं छोटे बड़े लका १ दूका १ लो १ उका १ ब्रोगीनः में कुछ फलक नहीं करते दाना को (दन) पानी को (पनी) ब्रोगीनः लिखते हैं इसी सबब से ऐसा बहुत देखने में लगता है कि कैथी चिटठियों को बहुत ल्हादमी बहुत कन ल्हाण से थोड़ा बहुत पढ़ सकते हैं ऐसी ल्हा शुद्ध लिखा वट के मिटाने के वासते बड़े विद्वान् लो १ बुद्धिमान शनीप जो सी. नेम फिलड साहब वहा दु १ एम. ए. जो पहिले ल्हा वय के मदन सो के डाइने कदने

C. No. 8806 Page R/1/-
34433

1067

भूमिका
श्री गणेशाय नमः

जानना चाहिये कि जब तक कैथी पढ़ने
वाले सिविक पाटी पर लोना मासी लोना पहाड़ा
सवारी ब्रगेनः सीप्या करते हैं लोना बहुत दुल्हा
तो मुहूर्तवानी जानकी की पाटी वह भी
गलत वे समझे वृद्ध पढ़लिया मानों सब कुछ
पढ़लिया शुद्ध लिखना तो वह जानते ही
नहीं छोटे बड़े लका १ दुका १ लोना उका १
ब्रगेनः में कुछ फलक नहीं करते दाना को
(दन) पानी को (पनी) ब्रगेनः लिखते हैं
इसी सबब से ऐसा बहुत देखने में लगता है
कि कैथी चिट्ठियों को बहुत ल्हादमी बहुत
का ल्हादमी से थोड़ा बहुत पढ़ सकते हैं
ऐसी ल्हादमी लिखावट के मिटाने के वासते
बड़े विद्वान् लोना बुद्धिमान शरीर
जो सी. नेम फिलड साहब वहादुर एम. ए.
जो पहिले ल्हादमी के मदन सो के डाइने कदने

लोग लव वही के इन सपेकद हैं लपने
डाइनेकदनी के प्रका में वड़ी मेहनत लोग
लचछे २ लोगों की सलाह से कैथी बन
माला दो हिस्सों में ऐसी नीति से तैयार कराई
कि उसके पढ़ने से कैथी बहुत सही २ लिखी
जा सकती है संस्कृत लखी फारसी
संगीत के दो तीन लच्छे एक में मिले हुए
ऐसे शब्द उसकी नीति बन सही २ लिखे
जा सकते हैं लोग लव लफण सही लिखे
जा सकते हैं तो वह सही पढ़े भी जा सकते हैं
जो लोग शोचें तो यह किताबी बड़ी बात
साहब वहादुर की मेहनतानी से हो गई हम
लोगों को इस बात के वासते साहब वहादुर
का जी से इस्मान मंद होना चाहिये कैथी
लच्छों में लव तक कोई ऐसी किताब
नहीं देखने में आई कि जिस से उन लच्छों
के पढ़ने वालों को लचछी तरह से चिढ़ी
पानी लिखना लावे इस वासते उ नहीं
साहब वहादुर के कुकुम से यह पुस्तक
(पतनहिताशिनी) नागरी से कैथी लच्छों
से मुक्त बन सही २ लिखी गई है इस किताब

के लिखने में यह बड़ा विचार रहा है कि इस
में वही शब्द हों जो गांव वाले बोलते हैं चाहे
यह संस्कृत हिंदी लगनवी प्रगामी जिस
बोली के हों जिसमें गांव के लोग मुहूर्तियों
की थोड़ी मरुद से इस का मतलब समझें जॉप
जहां तक होसकाहे तहां तक इस किताब को
लिखावट में इस का भी बहुत विचार रक्खा
गया है कि शब्द चाहे जिस बोली के हों सही
लिखे जॉप बोलने में चाहे वे जैसा बोलें जानें
हों यन इस बात में लाजानी हो गई कि बहुत
से संस्कृत लगनवी बंगीनः लगन्यों के
बदले कैथी में कोई लगन नहीं हैं लोण
जैसा लोण बहुत से लगन्यों के बदले
देवनागरी लगन्यों को तोड़ फोड़ करनी
तनह के लगन बन लिपि गये हैं जैसे ही
उन लगन के बदले नये लगन भी
बनाये जॉप तो गांव के लोग उन्हें कुछ भी
न समझेंगे लोण जो मतलब है वह पूरा न
होगा जैसे (ख) (अ) कि इन को तोड़ने से
(कश) लोण (जज) वा (न) हो सकते हैं
यन मैं जानता हूं कि इनको कोई नहीं समझता

इस वासते (क्ष) की जगह (छ) लो० (अ)
 की जगह (ग) लिखा गया है (ष) के जगह
 पर कहीं (प) लो० कहीं (श) जैसा जिस
 शब्द में बहुत करके बोला जाता है लिखा
 गया है (ड) (ओ) (रा) के जगह पर (न)
 लिखा है इसी तरह (ऋ) (ॠ) (लृ) (लृ)
 को (नि) (नी) (लनि) (लनी) लिखा है लो०
 ऐस ही बहुत से ल० वी ल० शब्दों को भी
 जानना चाहिए इस किताब के देखने पढ़ने
 वालों से विनती करता हूँ कि ऐसी शलाघातों
 पर प्याल करके इस किताब में जो मुद्दे से
 मूल चूक हुई हो उसको मेहनतानी करके
 सुधार दें जिसमें दूसरे दफ्तर के छपने में
 सही हो जाए—

इति



पत्रहिंतेशिनी

पहला कांड

पत्रलिखनेवाली विद्या का वर्णन

इस विद्या से चिट्ठियों का लिखना पढ़ना
जाना है चिट्ठियाँ (३) तरह की होती हैं एक
छोटों से बड़ों को लौन दूसरे बड़े से छोटों को
लौन तीसरे बराबर वालों को लौन हमेशा
जब पत्र लिखना हो तब यह विचार लेना
चाहिये कि जिसे पत्र लिखना है वह बड़ा
है बराबरवाला छोटा, छुटाई लौन बड़ाई
लौन बराबरी हो प्रकार की होती हैं एक
नातेदारी लौन मिताई में दूसरे जब कि
नातेदारी प्रीति न हो परंतु मुलाकात लौन

ज्ञान पहिचान वा संसार का कुछ काम
 उस से हो सो नातोदानी में तो छुटाई बड़ाई
 लीन बनावती उमर पर होगी लीन ज्ञान
 पहिचान में उसके इच्छितिलीन लीन येन
 लीन गुन पर जैसे कि लिखनेवाला कैसा
 ही बड़े दण्डेवाला वा येनी वा विद्वान्
 हो परंतु जब लिखने से बड़े नातोदानी को
 लिखेगा तो ज़रूर बड़ा लीन पुसुषा करके
 लिखेगा लीन जिस से नातोदानी नहीं है
 उसे जब लिखते हैं तब चाहे वह उमर में
 छोटा हो पर दण्डे वा येन वा विद्वान् में
 लिखनेवाले से सिवाय है तो भी उसे बड़ा
 ही करके लिखेंगे लीन चाहे उमर में कैसा
 ही बड़ा है पर दण्डे वंगीन: में लिखनेवाले
 से काम है तो बड़ा करके लिखना कुछ
 ज़रूर न होगा—

चिट्ठी लिखने में कई बातों का विचार
 रखना चाहिये पहले यह कि सांगे यात्र में
 कोई बेमतलब बात न हो दूसरे यह कि
 ऐसे सहल २ शब्द हों कि जिनमें सब
 लोग समझें चाहे वह हिंदी संस्कृत

प्राचीन लपकी में से जिस बोली के हों तीसरे
 यह कि वगन बहुत छोड़े में लोच डी कर हों
 कोई बात लपकी छद्म से बढ़ने न पावे थोथे
 यह कि संस्कृत की नीति पर कई पद एक
 में मिलने न पावे पांथवे यह कि वाप मा को
 ऐसी बातों न लिखे कि लप की वडी कनिपा
 होगी पा में इहमानमंद होऊंगा कर्णों कि
 ऐसी बातों से एक तरह की गुदाई पाई जाती
 है छोटे इस बात का विचार लपके कि लपदि
 से लपत तक एक ही तरह की लिखावट हो
 ऐसा न हो कि कहीं छोटा कहीं बडा लोच
 कहीं लपना कहीं बेगाना बनादिवे सातवे
 यह कि सत्कारी कायणात लपणी परवने
 में किसी तरह की बनावट वा सजावट वा
 कठिन शब्द नहीं केवल साफ़ र मालव
 हो हिंदी में बहुत प्रकार के लपदाव लोच
 ललकावे लपथात शिनामा लिखने की
 नीतें नहीं होती जैसे कि उरद प्राचीन में हैं
 हिंदी में जो बड़े को लिखना हो तो सिद्धि
 शरी लोच छोटे लोच बनावन वाले को
 लिखना हो तो सत्रमति शरी लिखते हैं

२ पतनपुतन की लोम से माता को

सिद्धि शरीर सव शुभोपमा योगी
 माता जी को शिवदत्त का पतनाम पढ़ें ये-
 लाप की चिद्वी पढ़ें थी उसे पढ़ कर मैं
 बहुत प्रशुश कृष्ण लाप की मनीषी पुताविक
 मैं वहिन के धन गति था जीजा मैं मैं ने कहा
 था कि माता जी ने वहिन को बुलाया है
 लोम लाप को बहुत २ तनह से लाशीनुवाह
 दिया है पर उन्होंने ने कह कि लम्बी के
 जाने में मुझे बड़ी दिक्कत होगी जाड़े के
 दिन लाने दो मैं साहब के साथ दौने पर
 जाऊंगा तब ले जाना लागो मैं ने हि लम्बी
 की थी कि मेने कपड़े बहुत पुराने कुर हैं दो
 तीन जोड़े मेणदो पतंगु लम्बी तक कोई
 कपड़ा मेने पास नहीं पढ़ें था मेरा बड़ा हान
 है जो दश वातह दिन लोम देर रुई तो माने
 शर्म के बाहर निकलना बहुत कठिन होगा
 मि० लाशाढ़ शुक्ल ३ संवत् १८२७
 तथा जून ता० ३ सन् १८७० ई० —

३ पातलिपुत्र के नाम

सिद्धि शिनी ई मन्वोपनि विनायमानवाच
 नाम पासाद जीव को मृगवली का पनाम
 पङ्कथे — कल नाम पुन से एक ल्नादसी ल्नागि
 उसके कहने से जाना गी कि वहां हो दिनत
 कवनावन पानी वनसा नदी भी बहुत बड़ी
 है लो १ ईश्वर की दृष्टि से ल्नान भी ससा
 होने लगा है लो १ ल्नाव तक बहुत वीकुल
 थे कि कभी होगा पनमेश्वर ने ल्नापनी दृष्टि
 की ल्नाव पदों के देने में देन न था हि दे जो
 मृगी हो तो कल जाकर बांद हूं मेरे पास
 छपे हुए पदों के हैं लो १ वही लो १ लेने
 वाले हैं जिनहोंने पन साल लिगी था —
 मि० कान्तिक वही ५ संवत् १८२७ तथा
 ल्नाकद्वीप ११०५ सन् १८७० ई०

४ पातलिपुत्र की लो १ से नाना को

सिद्धि शिनी ५ सकल शुभोपमा पौग
 नाना जी को ल्नावदुल्ललह की बंधगी पङ्कथे —
 ल्नाप कह गये थे कि दृष्टी दृष्टल की

पुस्तकें ल्याह दश दिनमें हम भेज देंगे परंतु
 एक महीना होगी लम्बी तक मुद्दे पोथियां
 न मिलीं पंडित साहब गेण तक्रैद कर्तते हैं
 लोन जिन लड़कों के पास किताबें थीं उनमें
 उनहोंने यहा दिया मैं लम्बी तीसरी दफ्तर
 में पड़ा हूं ल्याप के पास पोथियां यही हैं लोन
 यहां मोल लेने में मित्राणि बुकसान के कुछ
 फ़ादिदा नहीं है लव सुधि कर्तके मिजवा
 दीजि देगा नहीं तो दफ्तर में किसी लापिक
 न रहेंगा माताजी की लोन से पन्नाम पहंचे-
 मि० शतावन शुद्ध ४ संवत् १८२७ तथा
 जोलाई ता० २४ सन् १८७० ई०

धपतन नाती की लोन से नानी को

सिद्धि शरी ध नानी जी को रामपन साह
 का पन्नाम पहंचे—यहां में बहुत लयछी
 गनह लानंद में हूं लोन ल्याप के शुभसमाया
 गतानि दिन यादता हूं ल्याप का पतन पहंचा
 ल्याप की मन्जी माताविक १७ रुपये की
 सक्कानी हुंडी भेजाता हूं वरु भाई नागपिन-
 दास के नाम है हुंडी की पीठ पर मन्पाई लिप्य-

क१ स१ कारी अ१ जाने में ले जावें वहां से गु१ ग
 गु१ पे मिल जावेंगे कुछ अ१ थ न१ देना होगा
 जो वहां पूछें कि किसने हुंडी भेजी है तो भेजा
 नाम लेवें लो१ जो पूछें कि किस के नाम है
 तो लपना नाम बता दें तीन महीने पीछे
 दूसरी १०७ गु० की हुंडी भेजुंगा अ१ गि१ जमा
 ११ पि१ में ११ चित्त उसी लो१ है - मि० माध
 वदी १० संवत् १८१८ तथा ३ जनवरी सन्
 १८७१ ई०

ई पत१ चाचा के नाम

सिद्धि शरी प्र स१ वोपमा दी१ ग१ चाचा
 जीव को मारव दीन का प१ नाम पढ़ें लो१
 जीव से लप वल नाम पु१ को ग१ दें तब से
 लप का कोई पत१ नहीं लप पिताजी लो१
 माताजी सब वहुत ब१ कुल हैं वहुत जलद
 लपने शुभ समाचार से प१ मनन कीजिए
 लप कह ग१ दें कि हम वहां पढ़ें चक१ गु१
 लसवाव लेका१ ल्हादमी भेजेंगे उसका भी
 कुछ हाल न जान पड़ा लो१ ११ ज्ञा साहब से
 लप से भेट हुई वा नहीं जो हुई तो वे किस

तब से आप से मिले चाहिये कि कोई न कोई
 जान ब्रह्म आप के गोपगान का जलनिकल
 लावे क्योंकि अब लवये में ही एक दो
 हिंदुसतानी सनको हैं और उनही लोगों
 के हैं हम लोगों का बड़ा मान है पुस्तक वेचने
 वाले लाला रामदास मुझे मिले थे आपने
 रुपये मांगते थे मैं ठीक २ नहीं जानता कि
 उनके कितने रुपये आप चाहते हैं नहीं तो मैं
 दे देता जो आप लिख भेजें उन्हें दे दूँ

७ पात मानणे की ओर से मामा को

मिद्वि शरीर स कल गुन याम मामाणी
 को कविपाशंकर का पत्र नाम पढ़ें - आपने
 जो छोटी वहिन के विवाह के रुपये आपने
 लिखा था कि आपला सूर्य मल के हैं गनना
 बनगई है उससे बहुत पुरी हुई और माता
 जी ने भी बहुत पसंद किया है क्योंकि बहुत अच्छा
 पढ़ा लिखा मिहनती कामसुत बन है ईश्वर
 उसको चिरंजीव न करे आपने जो लाला
 साहब की बातें लिखीं मुझे उनसे बहुत ही
 आशा है कि वे आपसे किस बात

का कोलकाना कानोहें क्वा हम उनके लड़के
को मोल लेते हैं जो इतने रुपये उन्हें दें हम
से जो हो सकेगा वह अपनी लड़की को देंगे
कि मलमंसी की बात नहीं है मलावेइसी
को बहुत नहीं समझते कि उनका धन वस
जायगा बिनाह क्वा कुल्ला मोल दें कुल्ला
बड़े पछतावे की बात है कि अभी दे नीते
इहां से नहीं मिटी - मि० चैतन वधि७ संवत्
१८२७ तथा १मानच सन १८७० ई०

८ पानि वहीनके वेदेकी लो० से मोसी को

मिदिय शरी प हित कानिनी मोसी को राम
दयाल का पाना म पड़्यै - आप की चिट्ठी
डाक पन लाई हाल मालूम कुल्ला आपने
जो लिखा कि मेने देयने को आप का बहुत
बहुत जी चाहता है सो मय बात है मुद्दे भी
आपके यान छूने की बड़ी इच्छा है क्योंकि
अब पांच बरस बीगते हैं कि जबसे मैं आप
से दूर हूं पंगु क्वा कतून रेसी कोई तातील
होती है कि उसमें हाजिर होऊँ लो० न
छुट्टी मिलती है अब मैं ने सीतापुन की

वहली की दृष्टिवासा की है चाहिदे कि मंजू
हो जावे तब मैं जूनी २ ल्माप के पास होकर
जाऊंगा माता जी फलपुष्पावाह से ल्मासी नहीं
लोटीं कल चिद्वी ल्माई थी उसमें लिखा
था कि ल्मासी १५ दिन वहां ल्मा १ रहना
होगा उस के पीछे सब लोग वहां से चलेंगे
चाहिदे कि २० दिन में ल्मा जावें- मि० पौश
शुदी १४ संवा १८२७ तथा १५ दिसंबर
सन १८७० ई०

दं पाणि छोटे माई की ल्मा १ से बड़े माई को

सिद्धि शरी ५ सत्र शुभोपमा गौर
माई की म वप्पश को १ही म वप्पश का
सलाम पहुंचे- ल्मागे कलता १ पन में
गालिव का हाल सुनकर बड़ा दुःख हुआ
कुछ कह नहीं सकता कि कितनी बड़ी देवी
पड़ी कहां ल्माप उसके विवाह की गदवी
में थे कहां वरु सब को छोड़ कर ल्माप ही
चला गया इस दुःख का कहां तक बनन
करूं कि गोते भी नहीं बनता बड़ी विपत्ति
की बात है कि ऐसा सुपूत लिखा पढ़ा लड़का

यल वसे लव हमागे शोध काने लो१ नेनेसे
करी होसकताहै सवूरी के सित्राई कोई ध्वानहीं
लव जो ल्पाय सवूरी न कोनेगे लो१ सवको ।
दिलासा नंदगे तो दे सव लो१तों शि१ पीटरक१
म१ जावेंगी लो१ कुछ फरिदः नहोगा ईश्वर
उस बेचारे को बैकुंठ त्रासदे लो१ हम लोगोंको
संतोष दे - मि० मा१ १५६ शु१ ५ संवा १८२८
तथा ल्पा१ सा१ स१ १८७१६०

१०५११ वहनोई की लो१ से साली को

सब्रसगि शरी वड़ी साली को नंदनंदन का
पिथा पीगपि पड़ुंथै बहुत दिनों के पीछे गुमहान
पत१ ल्पा१ ल्पाय के शुभ समाचा१ जानने से
चिगात तहदिल कृ१ ल्पा१ से जव पूछो कि
ल्पा१ प्यत कहीं नहीं भेजती हैं तो ल्पा१ यह
जवाब देती हैं कि कोई लिखने वाला न था
अथवा लो१ दु१ ल्पा१ ने निकाला है लो१
जो यह बात है तो यह भी किस की थूक है मैंने
तो ल्पा१ से कई बार कहा था कि धे किताबें
नागरी की जो ल्पा१ भेजना का१ के एक छो
महीने में पढ़लेंगी तो ल्पा१ ने प्यत पत१ लिखने

में किसी से हाथ न जोड़ने पड़ेंगे पतंगु ल्नाप
 कों मानेंगी देव्यो मेरी छोटी वहिनने देव्यो-
 ही देव्यो नागरी का लिप्यना पढ़ना सीखलिया।
 लव सव धन का हिसाव किताव वही लिप्यती
 है लो० माताजी की लो० से सव को चिट्ठी
 पाती लिप्या करती है लो० धन में उस से बड़ा
 काम निकलता है जब ईश्वर की कृपा से बड़ी
 होगी तो लपने लड़के वालों को पहले ही से
 लख छीर वांते सिखलावेगी लो० जो बात
 कहेगी वह ठीक २ लो० बुद्धिमानी से कहेगी
 लव भी कुछ नहीं गपा है जो ल्नाप मुसौं दहों
 तो ल्नाप को एक ही महीने में मालव सन को
 ल्नापावे ल्नागे शुभ-मि० लगहन वही ७
 संवत् १८२६ तथा नवंबर सन् १८६६ ई०

११ पातृसेवक की लो० से मन्त्रामी को

सिद्धि शरीर सकल गुण यामगाणा।
 साहब को राम सहाय का पनाम पढ़ें चै-
 ल्नाप कल में धन में प्यथ की लो० से बहुत
 तंगी है लो० इसी में लड़के का विवाह होने
 वाला है लो० ल्नाप के सिवार् को ईहि लो०

पालन करने वाला नहीं है कि उस को तकलीफ
 दू जो विवाह न होता तो इतनी पातन भी न
 थी परंतु यह दूषण का काम है जो अच्छी
 तरह से न करें तो आप के नौका कहलाते हैं
 मैंने मैत्रि मथुना परसाह से कई बात कहा कि
 सनका से तुम पराध मांगो दूषण पातन कन्या
 करेंगी परंतु उस को बड़ी लाज लगती है क्योंकि
 हमेशा से सनका का नाम क प्यारे हैं अब जोड़ी
 सी बात के वासते की आप को सतावे परंतु
 राधा पाव किसी तरह की गद्दी न हो सकी
 तो मैंने उस को पूछे विन यह लक्ष्मी आप के
 पास मेणी है कि जो ऐसे समय में सनका से
 पिछले हिस्सा का निपटाव हो जायगा तो बड़ी
 कन्या होगी लामो शुभ भिक्षु १६० संवत्
 १८२७

१२. पातन गहसीलदान वाकिसी

सनकारी लोहदेधन को

सिद्धि श्री पू कन्या सागर गहसीलदान
 साहब को परनाम के पीछे हि लक्षण है कि
 मैंने ब्रह्मा लाने के लिये आप का प्यार लागा

पतञ्जलि में कल किसी तरह से नहीं ला सकता
 क्योंकि साहवडिपुटी कमिशनर वहादुर की
 कचहरी में मेरा मुकदमा हो रहा है जो
 मैं लाप जाकर ठूवकारी करता हूँ हाँ परसों
 तक जो परमेश्वर चाहेंगे तो ज़रूर हाज़िर
 होऊँगा जो कोई बहुत ही ज़रूरत हो तो मेरा
 बानी करके कुछ भेज दीजिए उसी प्रकार
 लाप की सगुणी मोताविक काम हो जायगा
 ब्रह्म के हाज़िर होने में मुझे किसी तरह का
 उज़र न था पर ठूवकारी से लाया हूँ जो
 पहिले जो लापने लसपताल के थेंदके बाने
 में लिखा था सो मुझे मंज़ूर है जो लापलिये
 उस पर मैं लपने हसगपत करके भेज दूँ
 २७ १० माहज़ारी तक मुझे बहुत न होगा
 क्योंकि इसमें पुर्न बहुत भारी है ऐसे २
 दश रुपए बहुत से कामों में खर्च हुआ
 करते हैं लागे शुभ मि० फ० वदीय संवत्
 १८०६ तथा फरवरी सन् १८७० ई०

गीसगी कांड

इसमें वडों की लो० से छोड़ों को पात है
पुनः पुनः पिता की लो० से पुता को

सर्वसक्ति धारी चिंतणीवि पुनः रामदत्त
को शिव पुनसाह का लाशीन वाह पहुंचे—
लागे बहुत दिनों से गुमहाना पता नहीं लाया
जान नहीं पड़ता कि गुम कहां कहां हो कुछ
पढ़ते लिखते हो वा नौकरी करते हो हमने
वहां गुम को इसलिपि भेजा है कि जल्दी से
कुछ सिद्धी पढ़के लपने गांव लाकर धरती
प्रभेदारी वंगों को देखो पुनः गुमालूम नहीं
होता कि गुम कहां समझे बैठे हैं वहां गुमहं
पांच वरश हो गई लो० लपताक न जाना
गया कि गुम ने कहां किया अपनी बात तो यह
है कि लिखता पढ़ता इस बात तो नहीं है कि
गुम लपने धर का काम लो० लोगों के भाये
छोड़ कर लापदश रुपये की नौकरी के पीछे
सर्वदेश की धूनि छानो जाँ इसी प्येती में गुई
वंगों के उपनाम ने में कोई गदवीन निकासी

जात्रे तो कितना बड़ा मुनाफा है देखो नमोनी
 कानीयों को दुई की बड़ी चाहना है नमोनी
 जितनी दुई हिंदुस्तान में उनही मिले वह
 कम है वे लोग वगैरह फंड के हाकिमों से
 कहा करते हैं कि कोई ऐसी पित्त निकाली
 कि फंड में बहुत दुई मिला करे नमोनी शुभ
 मितो येन शुद्धि दे संवत् १८२७ तथा ता ० ८
 मा १५ सन् १८७० ई०

२५११ शुभसुन की नमोनी से धमाका

सुखसति श्री चिंजीव नाम दत्त को जित
 दत्त का नमोनी नवाह पहुंचे बहुत दिनों से
 गुम्हारी कोई पत्नी नहीं लाई वसतनफ
 का हाल कुछ जान नहीं पड़ता ताजि दिन
 चित्त उसी नमोनी लगा रहता है मला कमी
 कमी चिट्ठी तो लिखा करो क्यों कि पत्नी
 से नमोनी मुलाकात होती है नमोनी को से
 ही शोच नमोनी काम में हो पगो से ही किसी
 मित्त वा माई वंशु की पत्नी नमोनी है तो
 सब शोच ही जाते हैं नमोनी मन प्रश
 हो जाता है गुमने पहले लिखा था कि मैं

महारा के पहली दफ़ल की सब किताबें
 पढ़ चुका हूँ लो न मन में है कि ना न मल-
 सकूल में मारी हो जाऊँ मैं। जो हमारी
 सलाह लो तो तुमहारे पासते फिर बहुत
 लयछा होगा कि तुम लामने के डाकदरी
 के महारसे में मारी हो जा लो तीन वंश
 तक वहां डाकदरी भीषनी होगी लो न जव
 तक हो। रुपये का महीना भी मिलेगा इसको
 सिवाय वहां तुमहारी बड़ी साली भी है सब
 ताक का सुखीता तुम को होगा। यहां की बेकारी
 बहुत लयछी है वेदी की का गेणगाव बड़ी
 इणगाव का होता है सारकाव से ललगातलव
 मिलती है लो न जिस गेगी को देखने जालो
 उसमें ललगा फ्रीस लेने का दृष्टि पाव है
 सिवाय तीन वंश की मिहना है लो न तुमहें
 बहुत जालह लावेगा- शुभ मि० माघ बदी ५
 संवत् १८२७ तथा जलसती सन् १८७० ई०

३५११ वापकी लो न से वेदी को

सप्तसति शरी चिंतनी विनी वेदी नाम-
 दुलागी को थंडी पालाह का ला शीनवाह

पंहुथै बेरी तुमहारी चिट्ठी पंहुथी बड़ी खुशी
 हुई लो१ बहुत खुशी तो इससे हुई कि वह
 तुमहारी लिखी हुई थी तुम लपनी लम्मा
 से पहां के शुभ समाचार कह देना मैं कह
 लाया था कि कानहपुर से लपनी पंहुथ
 भेजूंगा पर वहां रहने का मेरा संयोग नहीं
 पड़ा इस सब वसे चिट्ठी न भेज सका लव
 पहां शरी काशी जी में छ दिन ठहरूंगा जो
 तुमहें पानी भेजनी हो तो रामजी मल्ल की
 कोठी नदें थोक के पते से भेजना लो१ छ दिन
 के पीछे मैं कलकत्ते को जाऊंगा जो माल
 मैं लाया था उसमें तिहाई विकचुका है—
 लो१ लखछा नफरल्ल हुआ है लो१ जो
 वचा है चाहिये कि कल तक वह भी विकचावे
 जो महाजन लपने रुपों का तकाणा करता
 हो तो तुम ५०० १०० बाला नोट किसी के पास
 गिरीं १ प्यवा देना लो१ उसको बेचा कर
 देना नहीं तो पंद्रह बीस दिन में मैं लाय
 ५१५ भेजूंगा तुम लपने पढ़ने लिखने
 लो१ सीने गूहने त्रोगे १ह में गाफिल न रहना
 त्रिद्वी लो१ गुन बड़ी चीज है थोड़ा बहुत

हिमाव भी सीध लो तो मेनी बड़ी व्युत्थो हो -
मि० वैशम्पय बड़ी ई संवत् १८२६ तथाल्पनेल
सन १८६६ ई०

४ पतञ्जलि की वेदी के नाम

सबमणि श्री नतनी पतञ्जलि को शिव
दीन का लालीन वाद पढ़ने बहुत दिनों में
गुमहारी चिट्ठी नहीं लाई कल एक जन की
जावानी सुना कि गुमवीमान हो इस बात को
सुनने से मुझे बड़ी उदासी हुई अब गुम को
चाहिए कि जलद लपने जाव का सब हाल
लिख भेजो मालूम नहीं कि किस की दवाई
कती हो लखछा आह प्रिय की दवाई हो
पतञ्जलि दीन बहुत पतञ्जलि से रहना पड़े
भीड़े का बचाव करना जहां तक हो सके मूख
से मित्रि कमी न प्याता जो गुमहारे वेदी की
सलाह हो तो जगह बदल डालो इससे भी
बड़ा फायदा होता है इन दोई का पानी बहुत
लखछा नीरोग है जो वहां गुमहारी भी भी
भी रहती है जो सब की मन्गी होवे गुम वहां
थली जा लो लो १ जाव का गुमहारी जो

लखछा नहोणावे तव तक थोथे दिन एक
चिट्ठी भेजती रहै ललागे शु० मि० ललाशाह
वही २ संवत् १८२७ तथा जून मन् १८७० ई०

५ पात मालिक की लो० से नौका को

सबसगि शरी नाम दीन कहा० को मालूम
हो कि इस महीने की २४ तारीख की तीसरे
पहर तक हम सब लौट लावेंगे तुम दो दिन
पहले सब मकान ह्मा० बहा० १ प्यना कोठरी
की कुंजी लाला ठाकुर प्रसाद लदा लतावे
नाणि० के पास में नें १ प्यना दी है तुम उन के
पास जाकर ५६ चिट्ठी दिय्याकर ले लेना
लो० कोठरी से सब लसवाव निकालकर
जो जहां का हो वहां बे देना कि जिस में
मकान सगि सा लो० हम खुसाफिर में न
समझ पड़े नामदास वगैरहमन को एक दिन
पहले कहला देना कि सब के लिपि प्याने को
वना १ कप्ये सब भीत० बाहर के पू० लाहमी
होंगे लिफाफा के भीत० एक चिट्ठी बिगाही
के नगीना की है वह ललिता नाई को दे देना
लो० समझ देना कि २६ तारीख का नगीना

सब जगह कह ल्यावे लो१ सेव मे हाथ जोड
 ल्यावे कि ज ११ २ ल्यावे पंहुंथो ही दो तीन
 सचानिगीं विधा होगी इसलिदे १२ कहानों
 का वंदो वसत क १ १ प्य ना धोड़ों के वामनेधाम
 लो१ हाथिगीं के वामतो था ११ जोगी१: सब
 वदो १ १ प्य ना कि उस प्रकृत दिक्रकृत न हो-
 लिप्यी नाम सहारि मि: शगवन शुदी २ संवत
 १६ २७ तथा पुलाईसन १८७० ई०

योथा कांड

छोदों लो१ वडो के सवाल लो१ जावा
 सज्ञा ले रपत वेदा की लो१ सेवाय को

सिधये शरीर (ई) मगनोपनि निवा जमान
 गिता जी को नाम दीनका पनाम पंहुंथे-
 ल्यागे वहुत दिनों से ल्याप की कोई चिटठी
 नहीं ल्याई यलने के वक्त ल्यापने कहा था
 कि ललठ वाने २ पीछे लुटे चिटठी लिप्या करवा
 पन न जाना कि किस कागज से ललमी त का
 कोई चिटठी नहीं ल्याई चाहता हूं कि कोई
 युक्त मेरी लो१ से हुई हो तो उसे माफ कीजिएगा
 ल्याप के कहने से मैं ने बेशाय्य शुदी २ से कुछ

संस्कृति पढ़ने का लगाना लगाया है लमी
 हितोपदेश पढ़ता हूं मुह को मनोसां है कि जो
 इसी तरह साल भर पढ़ता रहा तो नागरी
 बहुत दुसरा बोरीक हो जायगी लपनेतन
 मन से मेहनत करता हूं लागे जो कुछ उस
 का फल हो वही मुष्पिवाग है - शिवादिः
 ललाय पनाम -

३० पतनवापकी लोचन से देखे की

सुत्रसति शरी चिंजीवि लाला गमदीन
 को शिव दीन का ललाशी वाद पढ़ये लागे
 मैं ईश्वर की दया से लखछी गत हूं गुमहारी
 लखछी मलाई गत नि दिन परमेश्वर से
 चाहता हूं गुमहारी चिट्ठी पढ़ूँ वडी खुशी
 हुई गुमने जो मेने चिट्ठी न पढ़ूँ चने का
 गिलला लिप्य था सो ठीक है सत्य है जैसा
 गुमलिप्यो हो मैं ने वाद्य किता था कि लाठें
 दश में दिन मेरी एक चिट्ठी पढ़ूँ यती रहेगी
 पर की लिप्यो इन दिनों में हाकिमों के साथ
 वरावर होने में रहना जुला इस से पतन
 मेघने में डील हुई लोचन सवत रह लखछी

मलाई है कुछ धवड़ाने की बात नहीं हमारे
 कहने से तुमहारे संस्कृति पढ़ने का हाल
 जाना गी। तुमने बहुत लत चछा किया हितो-
 पदेश पढ़ने से बोली दुसरा होने के सिवाय
 लो० बहुत से फरिदे हैं कि उसकी बातें बहुत
 कानके सिखापन की हैं जो उन को पाद किने
 रहे तो बड़ा मला मानुश बन जाय जो तुम
 मेहनत करते हो तो ईश्वर चाहेंगे तो जात
 मेहनत का फल पा लोगे विन मेहनत विद्या
 नहीं मिल सकती लो० शुभमि० कार्तिका
 शुद्ध ५ संवत् १८२७ तथा सिंगर सन १८७७

सवाल २ पातलितोशिनी से मा को

सिद्धि शरी (६) माता जी को अन्न सेवक
 रामदीन का पनाम पढ़ें मैं लो० से विद्या
 होकर नौकरी के प्योण में काशी जी में
 पढ़ें। एक लठवाने के पीछे कनिश्चन दत्त
 व गी० दत्त महाजनों की दूकान में २५११०
 माहवारी पन कारिंदगी के काम में नौका
 हुला लमी एक ही महीने की तनप्राप्त
 मिली है उस में ७११० पनाम हो चुके हैं बाकी

छ १० धन के ब्रासो नकथे है भावान् थाहेंगे
 तो हो तीन महीने में २५ १० नक की कुंडी
 भेजूंगा इस शहर में नेशमी कपड़े लय रहे
 लो न ससो विकते हैं भेज मन है कि मालव
 के मुवाफिक जो लाप कु कुम दे तो मोल
 लेकर भेजवाएं इसके सिवा न भेज एक मित
 यहां रु रहें वे नेशमी कपड़ों की दुकान का तो
 हैं वे मुझे उधार भी देंगे लो न मोल में भी
 कमी करेंगे लाप का कु कुम चाहता हूं प्रीतिः
 का लिप्यु लागे शु० मि० माहों सुदी ३
 सवत १८२६ तथा लागा सवत १८७० ई०

जवाव माता की लो न से पुतन को

सवमति शरी चिनंणी विपुतन नाम दीन
 को भेज चहुत तनह से ला शीन वाद पहुंचे
 वेटा तुमहानी चिट्टी वड़ी लो सैन में लाई
 लाप्यै प्युल गार्द लो न छाती पड़ानी तुम
 जीते रहो तुमहानी भेकानी सुनका चहुत
 मन लानंद कु ला लो न जी व ठिकाने कु ला
 तुम ने जो लिप्या कि तीन चार महीने में
 २५ १० की कुंडी भेजूंगा सो भेज भैया तुम जीते

नहीगे तो बहुतसी झुंडियां मेजोगी लोभ में
 अथ कतूंगी तुमसे मुझे सबल्लासता है कि
 तुम्हारी सुधूती है कि तुमको लपने धन की
 इतनी शक्ति है मैं यह कभी कम समझती हूँ
 कि एक तुम दूसरे तुमनों की पान निकले लोभ लपने
 या नपैसे कमा लोभ में लोभ से तुम बेफिकर
 नही मैं यहां लपने देश में हूँ जो कुछ अथ
 का काम लोभों से सब तद्वीर कतलूंगी तुम
 यहां पन देश में किसी तरह की दिक्रता न
 उठाना हो पैसे लपने पास बनाये न पना
 कपड़े के वावत जो तुमने लिखा था सो मैने
 मेने उसका हाल यह है कि जो जगह पृच्छो
 तो किस चीज का काम नहीं है पन हाथ में भी
 तो कुछ होना चाहिये कोई संत नहीं देखेगा जो
 कपड़े वाला तुम्हारा वीरानी है लोभ तुम
 उससे प्रार्थना की लाशा न प्यते हो तो तुम
 भी तो उसके भित्त हो लोभ उसे भी तो तुम
 से लपने नफल की लास है जो उ था न
 देखेगा तो लपना नफल न प्यकन देखेगा
 यह तुम्हारी मूल है कि यह तुम को समता
 देखेगा अथ छा लोभी नहणा लोभित लोभो

द्वयलिपि जात्रेगा ल्नागे ल्नाशिशके सिवपि
 कपि लिप्यं शुभ मि० कुल्ना १ वटी ३ संवत्
 १८२७ तथा सितं वन सन् १८७० ई०

सबाल ३ पीते की ल्नागे से दौदे को

सिद्धि शरी (५) सन्वोपनि विनाजमान
 दादा जीव को नामदाता का पनाम पंहुये—
 ल्नागे १४ गरीप का लिप्या कुल्ना पतन कल
 तीसेने पहन डाक पन मेने पास पंहुया लिप्या
 कुल्ना हाल जाना ल्नापने जो छोटी वहिन
 के विवाह की वावग लिप्या है कि उसके देन
 से भी जलद छुटटी पाना बहुत जरूरी है ल्नागे
 पह कि ल्नाप का त्रिचा १ है कि कहीं से उधा १
 लेकर फरागुन ही तक उसे किसी न किसी गनर
 ल्नापनी ल्नागे पुगुयो की ल्नावतू के लपिक
 ल्नापने ठिकाने लगा दूं सच २ तो यह है कि
 जो ल्नाप के त्रिचा १ में होगा वही ठीक है ल्नागे
 में उस में कुछ कहने के लपिक नहीं पन ल्नाप
 ल्नाकेले उसका हाल ही नहीं लिप्यतो मुह से
 सलाह भी पूछते हैं इस वासते लिप्यता हूं
 मेरी थोड़ी समझ में ल्नामी उस की उमर कम

हे लम्बी पांथ ही वनश की होवेगी उसका
 विवाह करना इतनी जलदी बहुत बेसलाह
 हे लम्बी बहुत से संदेह लौन डन हैं कर्ण
 फरिदा जो लपने ऊपर लपनाय लीजिदे
 इस के सिवापि लम्बी इतना सुवीता नहीं कि
 लौन काम नकिपा १ही सही फिर कानलेक
 सैकड़ों रुपये वगैर में देकर ऐसे चेष्टातरी काम
 कीजिदे तो कोई लचर्छा बात नहोगी लम्बी
 पांथ छः रुणा १ रुपये लेकर ठाकुरों की गह
 धन पूंका तमाशा देया गी तो पीछे को इसका
 फल क्या होगा लौन कहां से लावेगा लौन किम
 गह से बचाव होगा लौन जो ककुम होगा
 उसमें उणन नहोगा लौन शुभ मिथोशवदी
 २ संवत् २८२६ तथा दिसंवत् सन् २८६६ ई०

जलाव दादा की लौन से पोते को

सब सति शरी चिन्नी विनाम दत्त को
 शिव दत्त का लाशीन वाद पकुं चै तुमहानी
 चिद्री लार्ह तुमहानी बुध विमानी से बड़ा
 लानंद लौन भगोसा कृष्ण मुद्दे तुमहानी
 सलाह विना गती भन काम कानन नही है

ईश्वर ने तुमको सवतार की बुद्धि दी है
 लो १ तुम्हारी ह १ एक बात बड़ी बुद्धि लो १
 समझ की होती है तुम्हारे पात के लो १ ५१
 मैं ने भी जो विचार किया तो तुम्हारी सलाह
 बहुत लच्छी पाई सचमच पां च छः व ११
 की लड़की का विवाह करना वे मालव है लो १
 सवतार से इसमें डर है इसके सिवा १ ५१
 शासतार की पोथी में भी दश व ११ तक का
 बचाव है किसी तार की कोई जलधि नहीं
 तब तक जो ५१ मेश्वर की दी हो जावे लो १
 तुम किसी जंघी नौकरी ५१ हो जा लो लो १
 उसकी मार्ग से लच्छी तार उस के विवाह
 करने की सामर्थ्य हो जावे इस प्रकार का
 लेकर विवाह करना लपने ऊपर एक लपना
 मोल लेना है लव में ऐसी बातों का मन कभी
 न कांगा शुभमि० माधु वधि २ संवत् १८२६
 तथा जनवरी सन् १८७० ई०

स० ४ पात मान्यो की लो १ से माया को

सिद्धि शरीर मन्त्रोपमा योग मा भी जा
 ११ (१) देवदेव को लसगा लली का

सलाम पढ़ेंचै ल्हागे एक महीने से माताजीको
 ज्ञान ल्हागा है पहले पहल ठंडाई बंगोनःपिलाई
 गई पनचम से कुछ वीक्षण नहु ल्हा लवडाकटा
 साहव के बालाने से लंगनेणी कुनैन संवेने
 व संवेणी को दी जाती है ईश्वर की कनिपासे
 किसी तरह का फलक जान पड़ता है मगो सा है
 कि जलद लचछी तरह ल्हागाम होजावे-
 ल्हाप मुचिगत नहं माजी ल्हाप को बहुत गिह
 किता करती है ल्हाप के पाम कोई सत्रागी भेजने
 को मुह से ल्हाण कहा है सो मैं चथा साहवका
 धोड़ा प्युध वपश सार्दस के साथ भेजकराहा
 हूं कि ज्ञान ल्हाददेगा ल्हागे छोटे माई नसीपुध
 दीन को भी ज्ञान साथ लाददेगा जिसमें ल्हाप
 के दर्शन ल्हागे उनकी भेंट दीनों हों ल्हागे
 शुभ मि० वैशाख शुदी १२ संवा १८२७ तथा
 ल्हापनेल सन १८७० ई०

जवाव पतन मामा की ल्हागे से मान्णे को

सुप्रमति शरी चिनंजीवि सैफद ल्हासगा
 ल्हाली को हसनवेग की ल्हाशीस पढ़ेंचै -
 ल्हागे पुमहागी थिदो ल्हाई पुमहागी भाका

हाल सुन का जी को वड़ी वीकली हुई हम
 को वड़ा आश्चर्य है कि न तुम ने लो न
 तुमहने पिताने बीमारी का हाल लाज तक
 मुह को लिप्या लो न लव लिप्यो हो कि एक
 महीने से बीमार हैं बाहर लोगो आपकी समस्त
 मला वड़ी बात हुई कि लव पहले से कुछ
 आनाम जान पड़ता है भगवान् चाहें तो जल्द
 नोग दूर होगा यह दवा इस बीमारी के लिए बहुत
 अच्छी है तुमने जो मेरे लाने के मये लिप्या
 था सो मैंने मेरे तुमहने लिप्यने का कुछ
 काम न था मैं आप ही तुमहारी चिट्ठी के
 पहुंचते ही वहां लाता परंतु क्या कहूं सुनने
 में लाता है कि साहब डिप्टी कमिशनर
 वहादुर कल नमक की कोठी देखने लावेंगे
 लो न कुछ आश्चर्य नहीं कि हमेशः
 की तरह लसपताल में भी ला जावें इस
 वामते कल तक लाने में लाया हूं परंतु परशे
 लपने यहां मुह जात देखना लो न मैंने
 न सीपुद्धीन को छोड़े पर चढ़ा कर पठाता हूं
 इससे हाजिरी से तो मदरसे में उसका बड़ा
 हाज होमा लो न लड़के लागे हो जावेंगे

पन लाया न तुमहोने जुलाने से नवाना कभा
हूं छे एक दिन में उसे जल दी लो छे देना नहीं
तो मुह निस साहव मुह से गिल्ला कनेगे
लो न उसका हण ललग होगा शुंमि
जपे ११६ मुही ३ संवत् २८२७ तथा मई सन
१८७० ई०

संयु पात मतीने की लो न से भया को

सिद्धि शरी सन व शुभोपमा गीग
शरी (पु) चयाणी को शरी दगा का पन नाम
पहुं छे लागे ईश्वर की कनिपा से पहां
सवत नह लय छी मलाई है लाप की
लय छी मलाई चाहिं लाप की चिह्नी
लाई उससे पुश कुला शंकर सुना की
वेकारी लो न तंगी का हाल सुनकर मन में
वड़ा नण कुला लपने मागों नौकरी का
दवावा ऐसा बंद होगी है कि जहां द्यो
वेनो जगानी है कहीं नौकरी का नाम नहीं
है उस पन पनावी प्ह है कि नो ज २ सव
त नह के लोग पद लिप्य का तैगन होते
जाते हैं लो न सव की पही चाहना रहती है

कि कहीं मुहानिनी ब्रौनः की नौकरी करें
 कि किसी को होसिला नहीं होता कि कोई
 काम पड़ा करें या कुछ माल लेकर उस को
 नफ़रत की जागह देखें या अपने काम को अपने
 बुद्धि लोभ जानों मोई से बचकारें लोभ
 हजानों तद्वर्गों जीविका की हैं उनमें से किसी
 को लगभग नहीं जिसको देखो नौकरी दुंदुता
 है लगभग लोगों को देखो कि लखछेरधन
 के बड़े धनी हों पंगु जिस काम में कार्य
 देखो उस को करेंगे इन दिनों ऐसा संगीत है
 कि मेरी कचहरी में भी कोई जागह पाली नहीं
 है कि उस पर उन्हें बुलाऊँ एक मेरे मेहनतान
 साहव गोंड के णिले में मुहानिमिम बंदोबस्त
 हुए हैं जो लाप कहें तो मैं उन के पास उसके
 कावत लगानी मेणू लाशचरुई नहीं कि
 ये साहव दहा करके उसके नौकरी की कोई
 गह निकाल देवें जैसा लाप लिखेंगे तैसा
 किया जावेगा लागे शुभ मि० कान्तिकवदी
 १४ संवत् १८२७ तथा लकद्वन सन्
 १८७० ई०

जवाब यथाकीज्जोसमेसतीजेको

सुखमति शरी चिंतणीवि शरी धात को
 नाम पद्मसाह का लाशीनवाह पहुंचे तुमहागी
 पतनी लाई ईश्वर तुमहागी दिन २ दहली
 को ज्जोस जीता १ कथे सच मुख दूसतरह का
 ब्रकोत लपि है कि जहां देखो नोकरी का
 मोना है ज्जोस मैं ने तुम को ऐसे ही में लिखा
 कि जव उस के लिपे छूंटो २ बनारि धक गिः
 ज्जोस कोई सुगत न निकली पड़ोसी का बड़ा
 रुक होता है हम से न कहें तो किस से जाकर
 कहें मोड़े जाने में उसको किसी तरह का हीला
 नहोमा लाप बहुत जल्द उन साहब को
 लिखें जव ते बुलावेंगे उसी हम जावेंगा थड़ी
 मन की देन नहोगी तुम लव उसका ब्रह्माल
 न जानो जो दश वरश पहले था बल्कि उसे
 पहले इतनी जगूना न थी माता पिता कावन
 सेंट हाथ लागि था ज्जोस ईही सब बहना
 कि तुम ने हो तीन बार इस में सिफा निश की
 पर उसकी बेपरवाही से कोई काम देखने में
 न लागि तो भला लव भी कुछ हनन नहीं

उस का यह बुढ़ा पा तुम्हारे ही सब व से जीते
ईश्वर तुम को जीता न कप्ये नानो शुभ मि०
कानिक शुद्धि द संवत् १८२७ तथा न कद्वय
संवत् १८७० ई०

संई पाव किसी गोमी की लोन से वैई को
सिद्धि शरी मरवोपमा योगी हकीम साहब
शरी ५ गंगादीन को शिवनाम की बंदगी -
लोनी सीता नाम पंडु चै लागे लाचा न लपनी
गनण लण कनता हं कि दो महीने से मेरे
पेट में कुछ विकास रहा है जो व्याता हं नहीं
पचता पहले से कुछ प्युताक काम भी कनदी
है पन ब्रह्म भी नहीं पचती इससे सिद्धा कभी
कभी भुंड भी पिताता है पहिले भी पिताता था
पन हकीम मुहम्मद सैईद प्यां साहब की झाई
से लगाना हो गया था फिर लव बीस दिन से
बीमार हं मेरी नौकरी का हाल लाप लव छी
गरह जानते हैं कि जिस गरह की है इसमें एक
दिन सुवीते से एक जगह मुकाम नहीं रहता
लाण रहां लोनी कल ब्रहां उस पन सिद्धा
घोड़े के लोनी किसी सवानी में निवाह भी
नहीं फिर इस पन नामते की तकलीफें लोनी

पाने पीने में भी धून कुधून हो जाती है वात
 पह है कि हमेशः योगी बना रहता हूं जब तक
 आप मेरी पानी का के कोई दवा द्या पाकरोगे
 न देखेंगे तब तक योग की बीमारी से छुट्टी न
 पाऊंगा इस से चाहता हूं कि आप बड़ी दवा
 का के जैसा कहें वैसा कदू आपका बड़ा पेशा
 होगा सि० चैत० शु० १२ संवत् १८२७ तथा
 माघ सं० १८७० ई०

जब्राव चैदी की लो० से योगी को

सिद्धिशीलीपुंशीमाहवशी(शु)शिवराम को
 गंगादीन की जर्ज सीता नाम पहेंये आप की
 चिह्नी लान न पयने के वाचत आई मला
 बड़ी बात है कि आपनी राग पन तो मेरी सुनि
 आई था है आप सुनि करें पान करें ईश्वर
 आप को जलही आराम को बिना नाड़ी देये
 आपकी दवाई मैं कभी नहीं कासकता बीमारी
 बहुत दिन की हो गई है लो० एका एकी सिना
 देये माले दवा लिप्य देना मलाह नहीं है
 आप के पांथरे दिन मेरा मुकदमः कयही
 में पेश होने वाला है इस सब से मेरा ग्रहं

लाना जोरू होया जो ल्याप धन पन रहे लोम
 थोड़ी सी मेहनत करके हकीमशास्त्र वपुश
 साहब के सकान पन ल्यापावे गोवहुनअथही
 तनह बीमारी थुल जावेगी लोम ल्याप के
 सामने हवा लिप्यहुंया ल्याप धवनाइने नहीं
 दूधवन चाहेंगे गो बीमारी का नाम न रहेगा
 पन थोड़े दिनों के लिपे पागो ल्यापको छुट्दी
 लेनी होगी वा कोई लानास कीमती पालकी
 नयनी होगी मि० वे० व० ई० संवत् १८२७
 तथा माह ज्येष्ठ सन् १८७० ई०

स०७ पानहिमेशिनी की लोमसे गुरुको

सिद्धि श्री सन्वोपनि विराजमान
 शरीरहोगुरु जी साहब को मछारी लाल की
 हंडवत पहुंचे ल्याप जागते होंगे कि बहुत
 दिनों से मेरा इनादा था कि दुखी गरीबों के
 लिपे शहर में एक लसपताल बनवाऊं
 पन हन एक काम लपने ब्रह्म पन होना है
 इस ज्ञानसे कोई सूरत लपतक देख न पड़ी
 लप ईश्वर की मगणी से जान पड़ता है कि
 इसका ब्रह्म ल्यागि सो मेरे मन में है कि

५१ सों सवेने छः वण नेने थोड़ी जायेगी उस
 वक्त ल्याप के होने से वड़ी वक्त गहेगा
 पुन की कि कोई ल्य चखी वाग निकल जाये
 इसी से ल्याप मेहनतानी काने २ थड़ी के वक्त
 तक लीफ उठाकर पावून ल्याइया पुन का
 काम है ल्यागे शु० मि० माध शुही २ सं० २२०
 तथा माह जनवरी सन् १८७१ ई०

जवाव गुरु की ल्यो न से ये ले को

सतसंगि श्री चिन्मयी सि महा गी लाल को
 नाम परमाह की ल्यशीस पंडु ये गुमहागी
 चिटठी मेने बुलाने के लिए ल्याई गुमहागी
 ल्य चखी नीति वा पुन का दुगहा देपकन
 वडा ल्यानह कुला हैशपन गुम को इस से
 जापिहः सामनर्थ देहीक २ इस से सिपाप
 कोई नाम निशान नहीं ल्यो न कोई इस से
 ल्य चख काम है परमेश्वरन थोहो गो ५१ सों
 सवेने पावून २ ल्युशी से ल्याइया जो ल्याना
 नहुला गो इन थोड़ी मोरी २ वगों कायेपान
 पावून न लिपिया जहां सकान वने वरु जगह
 नीची नहो उसके थारों तनपर ल्युला हो उस

के नष्ट होके कोई नाला पाये। प्रयोगः ऐसा
 न हो कि जिसमें दुर्भाग्य लाने दूसरे जाहं
 तक होसके मकान उगाए मुख्य हो किसीके
 कहने पर न जाना इसमें सब दिनोंमें जाना
 होगा जोन कुत्सी प्रभु हो दीवार्ति कंयीहों
 जोन बागों गनक पिड़कितां नय्यवाना
 प्रसोई का धन प्रयोगः दू हो संयत् तिथिवा
 लाहि का धन धन भी नय्यना तुम तो लायही
 बुद्धिमान हो जोन ये सब बातें तुम ने पहले
 ही से शोच लीं होंगी पर सुचि रहने के लिये
 लिखी गई हैं शनिदुर्भाग्यने काम लावे शुभ
 मि० मास शु० २ संवत् १८२० तथा माह
 जनवरी सन् १८७० ई०

पाँचवाँ कांड

वन वन बालों के नाम

२५११ माई की जोन से माई को

सुवसति श्री (३) माई गम नागार्जुन को

शंकर दत्त का नमस्कार पहं ये माई माहव
 ली भी गक हिं वनशा नहीं हुई है इसमें सब

लोय धवनीमें हैं ईश्वर लपनी कनिपाकने
 नहीं तो हजाराओं लाम्ही लोय गोमू मजपावे
 जाना नहीं कि उबन की। हाल है जो ऐसी
 दिक्रकदाही नहो तो योपनों के लिपे कुछ
 याता लोय धन के वासते थोड़े गेहूं लोय
 यने मेजवा दीजिपे इहां वड़ी तंगी है मूसा नाम
 को नहीं मिलता जमीन पन किसी तनहरी धस
 नहीं जमती लाम्प जितने गेहूं मजवा गदि थे
 वे सब थुक गदि लाम्ब बोने ही मज के रह गये हैं
 जो उसमें हाथ लगाया जायगा तो की बोवेंगे
 लोय थोड़े के दाने के लिपे तो लाम्बिक दिक्रकदा
 है कीकि पांच थः से दाना उस कोने जयाही
 ब्रह्म कहां से लावे जो ब्रह्म दो से भी पावे ता
 वड़ी बात है जो गुम हैं इस के वेथने में कुछ
 उधान नहीं तो लाम्प कलह दो एक गाहक हैं
 उन के हाथ वेथ डाला जावे मि० लाम्प शाह
 वही ५ संवत् १८३६ गथा गून सन् १८६६ ई०

२ पान भाई की लोय से वड़ी वहिन को

मजमति शरीर वड़ी वहिन को कनी मुह-
 दीन का पथा उचित पड़ये लाम्प जव से गुम

उस लो० गर्द हो तुमहारे नाम हो चिरछिपां
 मेणी गर्द जवाव ल्मभी तक नहीं ल्पाणि जान
 नहीं पड़ता कि की सब वह है हाल साल लिखने
 की जगह पह है कि तुमहारे करने से मैप
 मैप जान के विवाह के लिये इमाभी नाई के
 मा० फा कई जगह वा कही की गर्द उसमें
 हो जगह पगानना वन गर्द है एक तो मुगल
 वाद के नईस मुहम्मद जमाया के पहां लो०
 हमरी शाहा वाद के नईस मोलवी मुवाककुसेन
 प्यो के पहां दोनों जगह की जाति विवाह की का
 हाल तुम ल्मच्छी तनह जानती हो लो० दोनों
 लड़कियां वहुत चतुर लो० उमा० में रई वरश
 की हैं इस मुकदमे में जाति पंक्ति के लोगों से
 लो० पुनिनी से भी पूछा गी उन सब लोगों
 की म०णी होती है कि मुगल वाद में ल्मच्छी
 है पंतु ल्मव तुमहारी जैसी म०णी हो तैसा
 लिप्य मेणो लो० ५०७ १० की कुंडी मेण
 दीजिये कि जिस से १७७५ के महीने में रईने
 की नीति का दी जात्रे ता० ७ माह जमादि स-
 सानी तथा ल्मकद्वन सन् १८७० ई०

३ पतनमित्र के नाम

सुप्रसन्न शरी (३) मित्र शेष्य इमामवप्रश
 साहव को कभी मुद्दीन का सलाम पहुंचे-
 लामे लाम की पुत्री की पत्नी लसी मेने
 पास पहुंची लिफाफा फोलाते ही बहुत लानंद
 हुआ ईश्वर ऐसी पुत्री सब को देवे परमात्मा
 को यह लड़का लाम को बहुत फल लो न
 उसकी उमर बढ़े लो न लाम की सेवा को
 लो न लाम की ही उस पर सदावनी रहे इस
 में संदेह नहीं है कि वह तुम्हारे लिये धन
 का दीर्घ पैदा हुआ इससे जितनी कुछ बचाई
 ईश्वर की करें लो न उसका इहसान मानें
 वह सब थोड़ा है लो न लपनी पुत्री का कुछ
 हाल नहीं कह सकता सच बात तो यह है कि
 जो लोग कहा करते हैं कि पुत्री के माने लामे
 में नहीं समाते सो वही मेरा हाल है लो न में
 जब तक उसे लपनी लो नों से नहीं देखाता
 तब तक सुहे कभी कल न पड़ेगी इससे मैं
 परमों पशू वहां ही होऊंगा लो न पुत्रु
 मैरा इहसान लली की माता हाथ की खुंवाई

के भेजती हैं निश्चय है कि मेरे साथ वे भी उस
दिन आवेंगी क्योंकि उन्हें यह पता तो ही नहीं
होती कि सच मुच यह प्युशी हमारे भागीकी
है मि० मा० १५६ वही १४ संवत् १८३७ तथा
लगभग सन् १८७० ई०

४ पानसेठ के नाम

सर्वसत्ति शरीरधरम सागर सेठ जी को
गमदील का आशीर्वाद पहुंचे सुना मरी
कि आप जगन्नाथ जी जाने का विधान करते
हैं देखा चाहिये कि आप के जाने के पीछे कोठी
के गुमाशते हमारे देने लेने का क्या साधन से
चलावेंगे अब तक हमेशा जब सत्कारी से
क्रिया लगाती थी तो आप के यहां से लेकर
सत्कारी प्रणाम में रुपया दायित्व किया जाता
था जो फिर पीछे से गांझ की आमदनी का
रुपया आप की कोठी में जमा होता रहता है
अब उसी नीति पर आप अपने कारिंदों से
कुछ कह दीजिये कि आप के पीछे रुपयों के
देने में किसी तरह की नाहीं जोर लीजिए
क्यों आपो वक्त की लिखूं मि० पदेशठ

कनिशन ५ संवत् १८२८ तथा मई मन् १८७१
ई०

पुपतंगमिती के नाम

सत्रसमिति शरी (३) मिती मुणफफनप्रां
को लव दुलकीम का सलास पहुंथे -
लाप का नपोंता लवदुलहक लो१ लहभु
ललाह के विवाह में मेने शामिल होने के
मयेपे पहुंथा उससे बड़ी ही प्युशी हुई सथ
है यह प्युशी का दिन दशव्रन ने बहुत मनाते
मनाते दिव्यानि है मैं तो शिन के वल पहुंथता
पन वीर कहुं कि एक महाजन ने मेने अपन
दीवानी में २०००७१० की नालिश की है लो
जो तानीप दून मैपानों के विवाह की है
उसी दिन उस मुकदमे की पेशी है इस
सबब से लाया हूं जो होसवेगा तो शिनो
पहुंते जून विवाह के वक्त गाति को ब्रह्म
पहुंथंगा लो१ लाप से मी इस मुकदमे
में सलाह की जात है क्योंकि इस मुकदमे
को लाप लथछी तनह से जानते हैं कि दो
वर्ष में ५००७१० से २०००७ हो गये हैं मैं ने

लब्ध थी तब ह सुना है कि वही प्याता लोभ
 रोप नामचा जाली बनाया गया है इस
 मुकदमे में भी व्राजिद लली साहव को
 वकील बना दिया है इस विचार से कि ल्याप से
 लोभ उनसे एक ही बात है इससे ल्याप में हनवानी
 करके वाहव की जाकर भी साहव को
 इस मुकदमे का लसल हाल लब्ध थी
 तब ह समझ दीजिये लोभ उनका मेहनताना
 लोभ शुकाना लभी ठीक नहीं कुल्ला
 ल्याप को जैसा समझ पड़े बात थी करके
 वैसा ठीक कर लीजिये मि० योश सुदी २२
 संवत् १८२८ तथा दिसंबर मन् १८७१ ई०

ह पद्म मित्र के नाम

स्रमति श्री दया सागर पशुचिमी
 सह लाला के वकील पंडित जीनार्नि
 साहव को नाम नार्नि का नमस्कार फुंये
 लोभ हमारे शत्रु सुन माहताव सिंह ने
 शरीर छोड़ दिया लोभ उनके आई वंधु
 लोभ में गार्नि के त्रासते ल्याप समें लुगड़ा
 है लोभ हाल साल इलाका सरकार की

लोभ से ग्राम गहरील है इसलिये आप को
 लिखता हूँ कि आप छोटिन के लिये हिं
 आपकी मुकद्दिम का हाल जानकी मुझे
 बताइ कि किस वृत्तिगद पन रह मुकद्दिमः
 किरी जावे गणा साहव ने हिवानामा ज्ञा
 दान पान भी लपने जाती मैरी नवनिहाल
 सिंह के नाम लिख दिना था लव मुकद्दिमः
 दान पान पदपिन कोन ज्ञा लपने ज्ञासा पन
 जोसी आप की सलाह होगी वैसा किरी
 जावेगा शुभ

उपागमिन् के नाम

सद्गति श्री शुभोपमा योगि श्री (३)
 दीवान जी को शिवदत्त का आशीर्वाद
 पहुंचे आपो आप को लिखता हूँ कि मायव
 पनसाह का इलाका बहुत सी डिगिनि होने
 के समय से इनदिनों नीलामकुल है लोभ
 यान गोरुहमने भी लिखे हैं पन उन में से दो
 गांवों की जमीन वेथानी है जो वनशा लयछी
 हुई तो पनीपर लयछी पैदा होती है पनगुबिना
 कुलों के वीर का होना कठिन है इस

वक्रांत में सब लोगों की पह सलाह पड़ती है
 कि दोनों निपनिपां गांवों में पांचर सातर
 कुएं पक्के बन बाँधिए जावें इसलिसे ल्हाप
 को लिखता हूं कि ल्हाप बनवाने के काम में
 बहुत चतुर हैं ल्हाप ने बहुतों ने मकान ल्हाप
 कुएं बनवाए हैं ल्हाप ल्हाप मुझे सलाह है
 कि ल्हाप ने ल्हाप बनवाना ल्हाप छोड़ा होगा
 कि देके में मेहनतानी काके इसको जवाब
 जगून दीजिएगा शुभ मि० चैतन शुद्ध ५
 सं० १८२८ त ० सन १८७१ ई०

पतनमित्तके नाम

सुत्रसति शरी मितन शरी (३) शिव लाल
 तनिवेदीकोगभायीन मिशन का नमस्कार
 पंडुंयै बड़ी बात हुई कि बहुत दिनों में ल्हाप
 की चिट्ठी पंडुंयै ल्हाप जी को बड़ा ल्हाप नंद
 दिया ऐसी खुशी हुई कि उस को कह नहीं
 सकता जो मिलला गुजारी की बातें ल्हाप ने
 मुझे पत्र लिखीं सो पह बड़ी कहावत है कि
 उलंदे चीन कोतवालैं डांडें मेरी दो तीन
 चिट्ठियों का जवाब ल्हाप ने न लिखा ल्हाप

अथ यत्तु गार्ड कानो हो लो १ उल्टे गिल्ला
 सुनाते हो लो १ पानों के न पड़ने का वहना
 लेते हो मिलने के वक़्त में आप से समझता
 पन अथ आपकी लो १ से लगाया लगा है
 तो सारी निम जाती नहीं लो १ मन साफ़ हो
 गति लो १ मुझे भरोसा है कि आप इसी तरह
 सहाय्य पान भेजते रहि दें कौंकि पानी से
 लो १ मुलाकात होती है लो १ मैं नागो १
 में ५७ १० माह्वारी पान सवडिपुदी इन संपेकदन
 के काम पान नौकान हूँ जगिधः शुभ मिन्कारतिक
 वही १ संवत् १८२७ त ० माह लकटू वन सन
 १८७० ई०

४ पानहोसत के नाम

सबसति शरी मित् १ जी शरी (३) रुकीमुद्
 दीन माह्व को गुलाम आपम का सलाम पड़्ये
 लो १ आपका पान पड़्ये आपने जो जल से
 तह जीव की कान गार्ड का हाल पूछा सो
 मित् १ मेने आप कल देहा लो १ तों के पढ़ने
 के मधे दे वडे २ सवाल जावाव होते हैं वडे २
 पंडित लोग आपनी रमति जाहिन कानते हैं

वे लोग यह कहते हैं कि सती लोचन पुत्रों में
 ईश्वरों के जन हैं लोचन ईश्वर की बहुत
 अच्छी वस्तुओं में इन दोनों का वनवन
 हिमसा है लोचन विद्या जिसमें समस्त होती है
 उससे सतीनिधि कौन लाला नकली जो है यह
 सिर्फ मादों की हृदय भी लोचन सतीनिधि
 की विलकुल नुकसान करने की बात है
 सतीनिधि के पढ़ाने के लक्षण गिनती फल कहते
 हैं सबसे बड़ा फल यह है कि वे इस से पूरी
 मलमंसी सीप्य जंगिनी लोचन जिस मलमल से
 परमात्मा ने सतीनिधि को बनाया है वह मलमल
 पूरा होगा सब रीति से पुत्र की दुःख सुख की
 साथी लोचन सहयोग होगी इन सतीनिधि की
 संगान भी अच्छी होगी क्योंकि मावाप की
 संगति के परमात्मा से कोई प्राप्ति लक्षण वालों
 पर नहीं होता तिस पीछे गतिहसथी लोचन
 दुर्निपादारी के कामों में पकड़ी होगी लोचन धन
 की बंधो वस्तुनिधि से जो बहुत सी विपत्तिलोगों
 पर पड़ती हैं उनसे लपने धन को बचावेंगी
 ऐसे ही यह कोई नहीं कहता है कि सतीनिधि का
 पढ़ाना परमात्मा से बाहर है परंपुरा लोका था

दृष्ट्य को संदेह करोते हैं आपका विचार इसमें
करी है मि० वैशाख शुद्ध ८ संवत् २६३७ तथा
सन १८७० ई०

१० पानि प्यां के नाम

सर्वसत्ति शरीर मित्र शरीर (३) हृगड़ा लूयां
को सुलह वाण प्यां का सलाम पहुंचे लोगों की
जवानी मालूम हुल्ला कि सागे लवध से तो
हृगड़ा वधेड़ा उठगि पंतु तुमहां ११ हं लमी
वही नवावी का लंये है कोई महीना ऐसा
नहीं बीतता कि जिस में दो एक प्रसाद नहीं
इस बीच में यह सुन पड़ा कि दशदिन पहिले
किसी हृगड़े में आप पानि ५०७ १० गुणमाना
भी हो गई इस के सुनने से लो १ वहुत दुःख
हुल्ला लखछा होगा कि जो तुम वश भन
लपना सवभाव दुसरा करो लो १ हितोपदेश
की कितारें कभी २ देखा करो लो १ जवनिस
लगे एक धूँट पानी पीकर यह मन में विचार
लो कि इस निस का लंत करी होगा लो १ जो
चुप रहोगे तो कितनी आपरांत लो १ प्रतापि
से वचाव होगा ईश्वर ने जो मनुष्य को

पशु पक्षियों से बड़ा किता है तो सिर्फ समझ
ही का भेद है जो मनुष्य भी पशु पक्षियों की
तगह लडाई लोभ गुस्से में पड़ा रहे तो फिर
उसमें लोभ बाध बोगेन में क्या फरक है यह
पता पड़कर तो आप नागाण होंगे परंतु जब
आपकी निमित्त जापगी लोभ विचार
करेंगे तो मेरा बड़ा गुन मानिएगा मिश्रतावन
शुद्ध ३ संवत् २६२८ तथा जौलाई सन् १८७०
ई०—

पुसाक समाप्त हुई—

होहा

नमः वसु वसु शशिईसवी प्रथम जनवरी मास
पूरी पातर्हितेशिनी लछमन पुरी निवास १

इति



